इकाई 13 सुरक्षा चिंताएं

इकाई की रूपरेखा

13.0 उद्देश्य

13.1 प्रस्तावना

13.2 सुरक्षा का निर्धारण

13.3 भारत की पारंपरिक सुरक्षा चिंताएं

13.3.1 पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय मुद्दे

13.4 गैर–पारंपरिक चुनौतियां

13.4.1 आतंकवाद और अतिवाद

13.4.2 ऊर्जा सुरक्षा

13.4.3 साइबर सुरक्षा

13.5 सारांश

13.6 कुछ उपयोगी सन्दर्भ

13.7 उत्तरमाला

13.0 उद्देश्य

इस इकाई में आप भारत की सुरक्षा चिंताओं के बारे में पढ़ रहे होंगे। सुरक्षा एक व्यापक और वाद–विवाद का विषय है; और आजकल लगभग हर विषय का अध्ययन सुरक्षा के नजरिए से किया जा सकता है। इस इकाई को पढ़ने के बाद, आप निम्नांकित विषयों से परिचित हो पाएंगे:

- सुरक्षा की अवधारणा की समझ;
- वैश्वीकरण के युग में सुरक्षा की बदलती प्रकृति की व्याख्या;
- वैश्वीकरण के संदर्भ में भारत की सुरक्षा चिंताओं का विश्लेषण;
- भारत की सुरक्षा के सामने आने वाली पारंपरिक चुनौतियों का वर्णन; तथा
- भारत के सामने गैर–पारंपरिक सुरक्षा खतरे।

13.1 प्रस्तावना

भारत समकालीन वैश्वीकृत दुनिया में विभिन्न सुरक्षा चुनौतियों का सामना कर रहा है। वैश्वीकरण के इस युग में संघर्ष और विवाद के नित नए क्षेत्र उभर रहे हैं जो सुरक्षा खतरों और चुनौतियों को बहुआयामी और बहुमुखी बना रहे हैं। यद्यपि अपनी स्वतंत्रता के सात दशकों के बाद भारत को अपनी सुरक्षा के लिए किसी भी अस्तित्वपरक खतरे का सामना नहीं करना पड़ा है, किन्तु तीव्र गति से आपस में जुड़ती हुई और परस्पर आश्रित होती

दुनिया में सुरक्षा संबंधी चिंताएँ कई गुना बढ़ गई हैं, तीव्र हो गई हैं और इनकी प्रकृति वैश्विक हैं।

उस व्यापक ऐतिहासिक संदर्भ को समझना महत्वपूर्ण है जिसमें भारत के सामने वर्तमान सुरक्षा चिंताओं का मूल्यांकन करने की आवश्यकता है। भारत की स्वतंत्रता के प्रारंभिक वर्षों के दौरान, प्रधान मंत्री जवाहरलाल नेहरू के नेतृत्व में, एशिया और अफ्रीका के देशों के साथ घनिष्ठ साझेदारी बनाने के लिए विभिन्न प्रयास किए गए। 1949 में नई दिल्ली में आयोजित एशियाई संबंध सम्मेलन और 1955 में बांडुंग सम्मेलन एफ्रो–एशियाई एकता बनाने के विचार पर की गयी कुछ महत्वपूर्ण पहल थीं। उसी समय भारत ने शीत युद्ध के गुटबंदी से बचने के प्रयास में पश्चिमी और समाजवादी दोनों गुटों से दूर रहने के लिए 'गुटनिरपेक्षता ' की एक स्वतंत्र नीति अपनाई। भारत की विदेश नीति गुटीय राजनीति से दूरी बनाकर सामरिक स्वायत्तता बनाए रखने पर केंद्रित थी। भारत की विदेश नीति गुटनिरपेक्षता, आयात प्रतिस्थापन और आत्मनिर्भरता की अपनी आर्थिक नीति के परिणामस्वरूप आदर्शवादी विदेश नीति बन गई।

हालाँकि, शीत युद्ध की समाप्ति ने पूरे परिदृश्य को बदल दिया। एकध्रुवीय विश्व अब वैश्वीकरण, उदारीकरण और क्षेत्रवाद के विचार के पुनरुत्थान की ताकतों का साक्षी बन रहा था। भारत ने उदार अंतरराष्ट्रीय आर्थिक व्यवस्था में एकीकृत होने के प्रयास में 1991 में अपना आर्थिक उदारीकरण कार्यक्रम शुरू किया। पश्चिमी पूंजी और प्रौद्योगिकी का प्रवाह, अमेरिका के साथ भारत के संबंधों में बदलाव, आसियान क्षेत्रीय मंच में भारत का प्रवेश गुटनिरपेक्षता पर भारत की पहले की स्थिति में आये कुछ प्रमुख बदलाव थे। 'पूर्व की ओर देखो' नीति का शुभारंभ दुनिया के साथ भारत के एकीकरण के इतिहास में एक महत्वपूर्ण घटना थी।

इसलिए, भारत शीत युद्ध के बाद की अवधि में धीरे–धीरे एक सजग पृथकतावाद से क्षेत्रीय बहुपक्षीय संस्थानों के साथ अधिक सक्रिय जुड़ाव की ओर बढ़ गया। हाल के वर्षों में, आधुनिक सशस्त्र बलों और बढ़ते आर्थिक विकास के साथ, भारत महान शक्ति के रुतबे की तलाश में शामिल प्रमुख एशियाई दिग्गजों में से एक के रूप में उभरा है, जिसके परिणामस्वरूप भारत की रणनीतिक नीतियों में महत्वपूर्ण बदलाव हुए हैं। साथ ही, 1990 के दशक की शुरुआत से दुनिया के राजनीतिक और आर्थिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण बदलावों के परिणामस्वरूप एक अधिक एकीकृत और परस्पर जुड़ी हुई दुनिया का आविर्भाव हुआ है, जिसने सुरक्षा और सुरक्षा चुनौतियों के विचार को भी फिर से परिभाषित किया है।

13.2 सुरक्षा का निर्धारण

सुरक्षा की अवधारणा सदैव, कुछ सार्थक तरीकों से, बदलती और विस्तारित होती रहती है। यह अभी अवधारणा व्यापक हो गई है और इसके अंतर्गत बहुत कुछ समाहित किया जा सकता है। पॉल विलियम्स ने ठीक ही कहा है कि सुरक्षा की अवधारणा ''दुनिया भर के समकालीन समाजों में चिंता का एक प्रमुख विषय है''; और यह इसे चर्चा का एक आकर्षक और महत्वपूर्ण विषय बनाता है। नीति निर्माताओं के लिए सुरक्षा एक सर्वव्यापी अवधारणा है, फिर भी इस शब्द की सर्वसम्मति से स्वीकृत कोई परिभाषा नहीं है। संयुक्त राष्ट्र, निरस्त्रीकरण मामलों के विभाग ने 1986 की रिपोर्ट में सुरक्षा को परिभाषित करते हुए कहा है कि ''एक ऐसी स्थिति जिसमें राज्य

मानते हैं कि सैन्य हमले, राजनीतिक दबाव या आर्थिक जबरदस्ती का कोई खतरा नहीं है, ताकि वे स्वतंत्र रूप से अपने विकास और प्रगति को आगे बढ़ाने में सक्षम हों।''

सुरक्षा के अर्थ पर बहस वैश्विक राजनीति की नई स्थितियों का प्रतिबिंब है जो वैश्वीकरण के कारण उत्पन्न हुई हैं। शीत युद्ध के बाद, नई भू–राजनीति के कई प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण व्यक्त किए जा रहे हैं और सुरक्षा की अवधारणा के पारंपरिक प्रतिनिधित्व और समझ की शांति शोधकर्ताओं, अंतर्राष्ट्रीय संबंधों के जानकारों और यदाकदा रक्षा–रणनीतिक अध्ययन करने वाले विशेषज्ञों द्वारा अंतर्विषयिक जांच की जा रही है। इस बात की स्वीकृति बढ़ती जा रही है कि सुरक्षा को एक व्यक्तिनिष्ठ , लोचदार और अनिवार्य रूप से विवादित अवधारणा के रूप में समझा जाना चाहिए और इसलिए इसका इस तरह से अध्ययन किया जाना चाहिए जहाँ राजनीतिक और सैन्य घटकों के साथ–साथ सामाजिक–आर्थिक और पर्यावरणीय घटकों को भी स्वीकार किया जाए।

सुरक्षा के पारंपरिक दृष्टिकोण में, मुख्य साधन सेना है, और एकमात्र सुरक्षा संदर्भ राज्य है। हालांकि, शीत युद्ध के बाद के युग में सुरक्षा की इस अवधारणा की, जहाँ इसे एक राज्य के लिए दूसरे राज्य से उभर रहे अस्तित्व संबंधी खतरों की अनुपस्थिति के रूप में देखा जाता है, की गंभीर आलोचना हुई है। 'सुरक्षा अध्ययन' का एक नया विषय उभरा है, जो इसे पारंपरिक दृष्टिकोण के विपरीत, एक सर्वव्यापी अवधारणा के रूप में चिन्हित करता है। पूर्ववर्ती खतरे राजकीय कारकों द्वारा की गयी हिंसा से उत्पन्न होते थे, और विवादों में मान्यता प्राप्त, संप्रभु, स्वतंत्र देश शामिल थे। किन्तु, गैर–राजकीय कारकों के उद्भव ने परिदृश्य को बदल दिया हैय आज के समय में जलवायु परिवर्तन, प्राकृतिक आपदाएं, संक्रामक रोग, भोजन की कमी, अनियमित प्रवास, मानव एवं मादक पदार्थों की तस्करी, और ऐसे अन्य अंतरराष्ट्रीय अपराध, जिनकी गैर–सैन्य प्रकृति है, अधिक गंभीर मुद्दे हैं। 11 सितंबर, 2001 और 26 नवंबर, 2008 की घटनाओं और आतंकवादी खतरों की संभावनाओं के परिणामस्वरूप सुरक्षा की धारणाओं के अर्थ का पुनर्मूल्यांकन हुआ है। यह अभी भी एक राष्ट्र के नागरिकों की सुरक्षा और भलाई की रक्षा के बारे में है, लेकिन सैन्य स्रोतों से खुले खतरों के बजाय, यह खतरे छुपे हुए,और शायद अकल्पनीय भी, है। इन नई चुनौतियों को 'गैर–पारंपरिक सुरक्षा' (एनटीएस) चुनौतियों के रूप में चिह्नित किया जा रहा है और यह चुनौतियाँ सुरक्षा के विचार को समझने के तरीके को बदल रही हैं। इसके बावजूद यह माना जाना चाहिए कि अंतर–राज्यीय संघर्षों से उत्पन्न पारंपरिक खतरे हालांकि अपेक्षाकृत महत्व में कम हो गए हैं लेकिन पूरी तरह से गायब नहीं हुए हैं।

सुरक्षा मुद्दों या खतरों की सूची पर बहुत बहस के बाद, संयुक्त राष्ट्र महासचिव के खतरों, चुनौतियों तथा परिवर्तन (2004) के लिए गठित उच्च स्तरीय पैनल ने सुरक्षा चुनौतियों के छह प्रमुख क्षेत्रों की पहचान की जो इस प्रकार हैं : आर्थिक और सामाजिक खतरे, अंतर–राज्यीय संघर्ष, आंतरिक संघर्ष, परमाणु, रासायनिक, जैविक हथियार, आतंकवाद और अंतरराष्ट्रीय संगठित अपराध। इसलिए, राज्य का उद्देश्य आम खतरों के खिलाफ द्विपक्षीय और बहुपक्षीय प्रयासों के माध्यम से व्यक्तिगत के साथ–साथ राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर व्यापक और सहकारी सुरक्षा सुनिश्चित करना होना चाहिए, लेकिन साथ ही राष्ट्रीय सुरक्षा राज्यों के लिए सबसे महत्वपूर्ण चिंता का विषय है।

इसी तरह भारत की सुरक्षा चिंताओं का मूल्यांकन करने के लिए पारंपरिक सरोकारों और गैर–पारंपरिक सरोकारों दोनों के दृष्टिकोण से इस मुद्दे का विश्लेषण करना महत्वपूर्ण है।

बोध प्रश्न 1

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) सुरक्षा के बदलते आयाम के आलोक में, भारत की सुरक्षा चिंताओं पर चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.3 भारत की पारंपरिक सुरक्षा चिंताएं।

आजादी के बाद से पिछले सात दशकों में भारत की विदेश नीति ने 'आदर्शवाद' से 'व्यावहारिकता' की यात्रा की है। भारत के एक विविधतापूर्ण राष्ट्र होने के नाते, देश के लिए मुख्य चुनौतियों में से एक है इस विविधता का प्रबंधन करना और राष्ट्रीय पहचान के साथ विविध जातीय, धार्मिक सांस्कृतिक और क्षेत्रीय पहचानों को आत्मसात करना। इन विभिन्नताओं के परिणामस्वरूप सामाजिक ध्रुवीकरण के साथ साथ विखंडन और पहचान की राजनीति भी हुई है। इसलिए, भारतीय गणराज्य के लिए सबसे बड़ी घरेलू चुनौती विविधतापूर्ण समाज में एकता और समावेश के मूल्यों को बनाए रखना है। साथ ही भारत की बहुत सी क्षेत्रीय और वैश्विक सुरक्षा चिंताएं इसकी घरेलू सुरक्षा समस्याओं से जुड़ी हुई हैं।

विदेश नीति के दायरे में अक्सर देश की सुरक्षा के लिए बाहरी चुनौतियों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। भारत की भौगोलिक स्थिति के कारण भारत अस्थिर और विकृत व्यवस्थाओं से संचालित राज्यों से घिरा हुआ है, जिससे एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्रीय सुरक्षा वातावरण बनता है। संपूर्ण भारत –प्रशांत क्षेत्र, जहाँ भारत केंद्रीय रूप से स्थित है, क्षेत्रीय और वैश्विक शक्तियों के जटिल और कभी–कभी प्रतिस्पर्धी हितों के चलते अपने सुरक्षा दृष्टिकोण में अभूतपूर्व परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। जैसे–जैसे विश्व का आर्थिक और राजनीतिक केंद्र भारत–प्रशांत क्षेत्र की ओर बढ़ता है, यह क्षेत्र कई क्षेत्रीय और बाहरी शक्तियों के बीच सत्ता–राजनीति का क्षेत्र बनता जा रहा है। ऐसी परिस्थितियों में भारत को इस क्षेत्र की कुछ महत्वपूर्ण शक्तियों की नीतियों और कार्यों को देखते हुए महत्वपूर्ण सुरक्षा चिंताओं का सामना करना पड रहा है।

13.3.1 पड़ोसी देशों के साथ द्विपक्षीय मुद्दे

चीनः भारत की विदेश नीति में महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक हमेशा अपने उत्तरी पड़ोसी चीन के साथ उसके संबंध रहे हैं। चीन के उदय और एशिया और दुनिया में प्रभुत्व की उसकी तलाश ने न केवल भारत के लिए बल्कि दुनिया में पश्चिमी वर्चस्व को चुनौती देने वाले सवालों और

जटिलताओं की एक नयी चुनौती को सामने रखा है। चीन ने भारत से काफी पहले आर्थिक सुधारों की शुरुआत की थी और तब से वह तेजी से आर्थिक विकास कर रहा है। वर्षों से हो रहे निर्बाध आर्थिक विकास ने देश के रक्षा बजट को बढ़ा दिया है, जिससे यह एक दुर्जेय सैन्य शक्ति बन गया है। चीन की आर्थिक और सैन्य वृद्धि और उसकी शक्ति प्रक्षेपण क्षमताएं क्षेत्रीय और वैश्विक शक्ति संतुलन को चुनौती देती दिख रही हैं।

दुनिया के दो एशियाई दिग्गजों, चीन और भारत, का उदय दुनिया के लिए कुछ जटिलताएं पैदा करेगा। पहले, उनकी प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र महाद्वीपीय था, लेकिन अब प्रतिस्पर्धा समुद्री क्षेत्र में स्थानांतरित हो गई है। भारत और चीन की महान शक्ति होने की आकांक्षाओं और सुरक्षा की उनकी खोज ने इन दोनों शक्तियों को रॉबर्ट कपलान के शब्दों में ''अपनी निगाहें जमीन से समुद्र की ओर पुनर्निर्देशित करने के लिए'' मजबूर कर दिया है। दोनों भारत–प्रशांत क्षेत्र में महत्वपूर्ण नौसैनिक शक्तियों के रूप में उभर रहे हैं जिसका कारण निरंतर आर्थिक विकास है य आर्थिक विकास जो मुख्य रूप से हिंद महासागर तथा सन्निहित जल क्षेत्रों के समुद्री मार्गों द्वारा वैश्विक बाजारों तक ले जाये जाने वाले ऊर्जा उत्पादों, कच्चे माल और तैयार उत्पादों की निरंतर एवं निर्बाध आपूर्ति पर अत्यधिक निर्भर है। इसलिए, दोनों देशों का क्षेत्रीय शांति और स्थिरता में एक निहित स्वार्थ है।

चीन–भारत संबंधों में कड़वे इतिहास के कुछ अध्याय हैं जिसमे 1962 का युद्ध और निरंतर सीमा विवाद उल्लेखनीय हैं। 2017 का डोकलाम गतिरोध सबसे हालिया गतिरोध है जब हिमालय में त्रयी सीमा क्षेत्र, जहां भूटान–चीन–भारत की सीमाएँ मिलती हैं, में 73 दिवसीय गतिरोध ने दोनों देशों के बीच तनाव पैदा किया। धन, ऊर्जा और प्रभाव की दौड़ में दोनों देशों के जटिल और कभी–कभी प्रतिस्पर्धी हित हैं। वे मध्य एशिया तथा अफ्रीका में संसाधनों, तेल और गैस की तलाश में और महान शक्ति बनने की अपनी महत्वाकांक्षा की प्रतिस्पर्धा में तेजी से शामिल हो रहे हैं।

पिछले कुछ वर्षों में भारत को घेरने के उद्देश्य से चीन की विवादित 'स्ट्रिंग्स ऑफ पर्ल्स' रणनीति के बारे में बहुत शोर हुआ है। अब चीन ने अपने बेल्ट एंड रोड पहल (बीआरआई) के साथ सार्वजनिक रूप से अपने इरादे स्पष्ट कर दिए हैं, जिसका उद्देश्य क्षेत्र में बड़े पैमाने पर समुद्र और भूमि आधारित बुनियादी ढांचे का विकास तथा प्राचीन 'रेशम सड़क' अवधारणा को पुनर्जीवित करना शामिल है। नई दिल्ली ने चीन के बीआरआई पर नाराजगी व्यक्त की है, खासकर चीन–पाकिस्तान आर्थिक गलियारे पर भारत के संदेहों को देखते हुए। इन चिंताओं के चलते भारत ने 2017 में बीजिंग में बेल्ट रोड फोरम में भाग लेने से इनकार कर दिया था।

हाल के वर्षों में भारत के पड़ोसी जल क्षेत्र में चीन की गतिविधियां भारत के लिए चिंताजनक रही हैं। हिंद महासागर क्षेत्र में चीन के बढ़ता समुद्री रुझान उसके वास्तविक इरादों के बारे में भारतीय रणनीतिक हलकों में आशंका पैदा कर रहे हैं। चीन ने हिन्द महासागर के उत्तरी समुद्री तट के मित्र देशों जैसे कि पाकिस्तान, श्रीलंका, बांग्लादेश, म्यांमार और मालदीव, मॉरीशस, सेशेल्स सहित अन्य छोटे द्वीपों में सहायता सुविधाओं की एक श्रृंखला को वित्त पोषित किया है। विशेष रूप से पाकिस्तान के दक्षिण–पश्चिमी तट पर स्थित ग्वादर बंदरगाह, जोकि ईरान की सीमा से लगभग 70 किलोमीटर और होर्मुज जलडमरूमध्य–जोकि एक प्रमुख तेल आपूर्ति मार्ग है– से 400 किलोमीटर पूर्व में स्थित है, ने अपनी सामरिक स्थिति के कारण बहुत ध्यान आकर्षित किया है। चीन ने जिबूती में अपना पहला आधिकारिक बाहरी

सैन्य अड्डा भी स्थापित किया है। हालांकि चीन ने इसे कभी स्वीकार नहीं किया और समझाया है कि ये बुनियादी ढांचे विशुद्ध रूप से व्यावसायिक उद्देश्य के लिए हैं। लेकिन यह सब दो एशियाई दिग्गजों के बीच एक पारम्परिक सुरक्षा दुविधा पैदा कर भारत को परेशान कर रहा है, क्योंकि चीन की नौसैनिक क्षमताओं का उस क्षेत्र पर सीधा असर पड़ता है जो भारत के लिए रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण है। चीन का जो भी दृष्टिकोण हो, उसके विशाल सैन्य बजट के साथ, दुनिया भर में उसके बढ़ते प्रभाव ने पड़ोसियों के बीच चिंता पैदा कर दी है। विडंबना यह है कि दोनों देशों के बीच स्वस्थ आर्थिक और व्यापारिक संबंधों के साथ–साथ दोनों देशों के बीच यह अविश्वास बरकरार है।

पाकिस्तानः एक और देश जिसके साथ भारत के कटु संबंधों का इतिहास रहा है, वह है पाकिस्तान। 1947 में विभाजन और दो राष्ट्रों के निर्माण के बाद से, भारत–पाकिस्तान संबंध अस्थिर रहे हैं। दोनों देशों के मध्य चार युद्ध और कई सीमा संघर्ष और झड़पें हो चुकी हैं। कुछ विश्लेषकों का तो यहाँ तक कहना है कि दोनों देश हमेशा युद्ध की स्थिति में रहते हैं।

कश्मीर दोनों देशों के बीच का मुख्य मुद्दा रहा है, विशेषकर कश्मीर में बढ़ते असंतोष और बार–बार अस्थिर स्थिति के साथ। सीमा पार आतंकवाद और पाकिस्तानी पक्ष की ओर से संघर्ष विराम का उल्लंघन हमेशा से प्रमुख अड़चनें रहीं हैं। पाकिस्तानी धरती पर पैदा हुआ आतंकवाद, जो विशेष रूप से भारत को लक्षित करता है, एक और प्रमुख मुद्दा है जिसने द्विपक्षीय संबंधों को खराब कर दिया है। भारत ने पाकिस्तान को अशांति फैलाने और आतंकवादियों को शहीद घोषित कर उनका महिमामंडन करने का आरोपी बनाया है।

भारत ने हमेशा सभी मोर्चों पर पाकिस्तान के साथ शांतिपूर्ण जुड़ाव की नीति अपनाई है। भारत ने आर्थिक, सांस्कृतिक और लोगों के आपसी संपर्क सहित सभी बकाया मुद्दों पर बातचीत और विश्वास निर्माण पर जोर दिया है। आर्थिक मोर्चे पर, भारत ने व्यापार और वाणिज्यिक जुड़ाव बढ़ाने पर जोर दिया है और पाकिस्तान को मोस्ट फेवर्ड नेशन (एमएफएन) का दर्जा दिया है। यद्यपि, पाकिस्तान ने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इस तरह की आर्थिक और सांस्कृतिक गतिविधियों को कश्मीर मुद्दे के नाम पर बंधक बना रखा है। समाधान की तलाश के सन्दर्भ मे पाकिस्तान की साफ नीयत के बारे में संदेह शांति पहल की बार–बार तोड़फोड़ से प्रबल हुआ। यह न केवल कारगिल युद्ध के रूप में वाजपेयी की लाहौर बस कूटनीति के उपरांत सामने आया, बल्कि मोदी की दिसंबर 2015 के अंत में पाकिस्तान की यात्रा के बाद जनवरी 2016 की शुरुआत में पठानकोट पर हुए हमले के बाद और पुष्ट हुआ। भारत के लिए इस संवाद को फिर से शुरू करना मुश्किल हो गया है जिसका कारण राज्य एजेंसियों और गैर–राजकीय कारकों के बीच गठजोड़ द्वारा समर्थित कुकृत्य हैं। मुंबई हमले (2008), भारतीय सैनिकों के सिर काटने का मामला (2013) और पठानकोट और उरी हमले (2017) इस बात को साबित करते हैं।

भारत और पाकिस्तान के बीच ऐतिहासिक दुश्मनी और पाकिस्तान और चीन के बीच घनिष्ठ संबंधों के चलते, इस क्षेत्र में भारत की चिंता हिंद महासागर क्षेत्र में संयुक्त चीन–पाक गतिविधियों से उत्पन्न खतरे का मुकाबला करने की भी हैं। संघर्ष की स्थिति में, चीन–पाकिस्तान गठबंधन की संभावनाएं भारत के लिए हानिकारक हो सकती हैं। पाकिस्तान में ग्वादर का डीप सी–पोर्ट चीन को एक 'सुनवाई पोस्ट' प्रदान करता है जहां से वह 'फारस की खाड़ी में अमेरिकी नौसैनिक गतिविधि, अरब सागर में भारतीय गतिविधि और हिंद महासागर में भविष्य में होने वाली अमेरिकी–भारतीय समुद्री सहयोग गतिविधियों की निगरानी कर सकता है।

हालांकि अकेले पाकिस्तान की नौसैनिक क्षमताएं भारत के लिए कोई चुनौती नहीं हैं, लेकिन चीनी और पाकिस्तानी नौसैनिक बलों का संयोजन वास्तव में भारत के लिए चिंता का कारण हो सकता है।

हाल के वर्षों में, पाकिस्तान द्वारा दी जा रही चुनौतियों से निपटने के लिए, भारत नियंत्रण रेखा (एलओसी) के आसपास स्थित उन तत्वों और स्थानों के खिलाफ जवाबी कार्रवाई कर रहा है जो सीमा पार आतंकवाद को बढ़ावा देने में शामिल हैं। सर्जिकल स्ट्राइक 2016 इसी दृष्टिकोण का एक उदाहरण था। भारत ने आसियान, ब्रिक्स और संयुक्त राष्ट्र जैसे विभिन्न बहुपक्षीय मंचों पर आतंकवाद को राजकीय नीति के रूप में प्रयोग करने में पाकिस्तान की संलिप्तता को उजागर करने का भी प्रयास किया है। ब्रिक्स 2017 की घोषणा ने विशेष रूप से लश्कर–ए–तैयबा (एलईटी) और जैश–ए–मोहम्मद (जेएम) जैसे पाकिस्तान स्थित आतंकवादी समूहों को खतरनाक आतंकवादी समूहों के रूप में नामित किया। इसलिए, पाकिस्तान के साथ संबंध हमेशा से भारत की सुरक्षा और रणनीतिक गणना की प्रमुख चिंताओं में से एक रहे हैं।

द्विपक्षीय संबंधों के अलावा चीन, जापान, पाकिस्तान, अमेरिका, रूस जैसे विभिन्न देशों के बीच की क्षेत्रीय भू–राजनीति और उनके परस्पर सम्बन्ध तथा नेपाल, बांग्लादेश, श्रीलंका और दक्षिण पूर्व एशिया जैसे अन्य पड़ोसी देशों के साथ संबंधों का विश्लेषण भारत की रणनीतिक अवधारणाओं को देखते हुए गहनता से किया गया है।

बोध प्रश्न 2

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) वर्तमान परिदृश्य में भारत के सामने प्रमुख पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों की चर्चा करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.4 गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियां।

वैश्वीकरण और तकनीकी क्रांति की प्रक्रिया ने विश्व की आर्थिक और तकनीकी प्रगति में क्रांति ला दी है। किन्तु, उन प्रक्रियाओं ने, जो अपने साथ इतने सारे लाभ लेकर आई हैं, ने हमारी सामूहिक कमजोरियों भी को उजागर किया है। वैश्वीकरण के लाभ सबको समान रूप से नहीं मिले हैं और राष्ट्रों के भीतर और सब ओर बढ़ती असमानता और अन्याय, वित्तीय बाजारों की अस्थिरता और पर्यावरण का क्षरण, सामूहिक विनाश के हथियारों का प्रसार जैसी

नई चुनौतियां सामने आई हैं। साथ ही उग्रपंथी, कट्टरपंथी, चरमपंथी, आतंकवादी, हैकर्स के समूह तथा समुद्री लुटेरों द्वारा अनाधृकित लाभ प्राप्त करने के लिए नए वातावरण का दोहन करने की कोशिश कर रहे हैं। गैर–राजकीय कारकों द्वारा दी जा रही इस तरह की अंतरराष्ट्रीय चुनौतियां समकालीन समय में और भी महत्वपूर्ण हो गई हैं।

13.4.1 आतंकवाद और अतिवाद

भारत के रक्षा मंत्रालय की 2006 की एक रिपोर्ट में उल्लेख किया गया था कि "भारत इस्लामी कट्टरवाद के उदय के साथ–साथ आतंकवाद की बढ़ती घटनाओं की भारत की सुरक्षा पर इसके द्वारा होने वाले प्रभावों, जिसमें राज्य द्वारा प्रायोजित और राजनीतिक हिंसा शामिल है, की निगरानी कर रहा है। भारत लंबे समय से आतंकवादी हमलों के निशाने पर रहा है। सीमा पार आतंकवाद लंबे समय से भारत के लिए एक प्रमुख सुरक्षा चिंता का विषय रहा है। भारत ने अतीत में घातक आतंकवादी हमलों का सामना किया है, जिसमें 1993 के मुंबई धमाके, 2001 में भारतीय संसद पर हमला, 2008 का मुंबई आतंकवादी हमला देश के प्रमुख शहरों में हुई खूनी आतंकवादी घटनाओं की श्रृंखला में से कुछ एक उल्लेख करने वाली घटनाएं हैं। भारत ने विभिन्न प्रकार के उग्रवादी समूहों और विशेष रूप से जम्मू और कश्मीर में सीमा पार आतंकवाद को प्रायोजित करने के लिए पाकिस्तान की भूमिका की लगातार आलोचना की है। यद्यपि भारत की आलोचना और अंतर्राष्ट्रीय दबाव के बावजूद पाकिस्तान ने लश्कर–ए–तैयबा और कश्मीर में सक्रिय अन्य आतंकवादी समूहों को संरक्षण देना जारी रखा है। मध्य एशिया और उत्तरी अफ्रीका के साथ अफगानिस्तान–पाकिस्तान के क्षेत्र आतंकवाद के अड्डे बने हुए हैं। अल–कायदा, इंडियन मुजाहिदीन (IM), लश्कर–ए–तैयबा, हरकत–उल–जिहाद –अल–इस्लाम (HuJI) जैश–ए–मोहम्मद (JeM), हक्कानी नेटवर्क और इस्लामिक स्टेट ऑफ इराक तथा सीरिया (ISIS) क्षेत्र के प्रमुख आतंकवादी संगठन हैं। भारत को घरेलू विद्रोही संगठनों तथा सिमी जैसे चरमपंथी समूहों तथा बांग्लादेश और पाकिस्तान जैसे पड़ोसी देशों में उनके समान विचारधारा वाले तत्वों के बीच संभावित संबंधों की चुनौती का भी सामना करना पड़ा है।

देश के लिए एक मजबूत आतंकवाद विरोधी प्रतिक्रिया तंत्र विकसित करना महत्वपूर्ण है। मुंबई हमलों के बाद की एक प्रमुख पहल एक नई राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए) का निर्माण है, जो आतंकवाद और संगठित अपराध के मामलों की जांच करने और मौजूदा तंत्र को कारगर बनाने के लिए खड़ी की गयी है। 2002 में आतंकवाद का मुकाबला करने के लिए खुफिया प्रयासों को सुव्यवस्थित करने के लिए दिल्ली में बहु–एजेंसी केंद्र (एमएसी) बनाया गया था, 2008 के मुंबई हमलों के बाद 2009 से इसे फिर से चालू किया गया है। सूचना साझा करने के उद्देश्य से इस संस्था को अंततः राष्ट्रीय आतंकवाद निरोधी केंद्र (एनसीटीसी) में बदल दिया गया। भारत ने मित्र देशों के साथ समुद्री खुफिया जानकारी, निगरानी और खुफिया टोह के कार्यों में आतंकवाद विरोधी सहयोग और सूचना साझाकरण को और गंभीरता से विकसित किये जाने की भी मांग की। भारत ने विभिन्न क्षेत्रीय और वैश्विक बहुपक्षीय मंचों पर इस तरह की गतिविधियों की लगातार निंदा की है। आतंकवाद और अतिवाद के क्षेत्र में एक बड़ी चुनौती राजकीय और गैर–राजकीय कारकों के गठजोड़ से निपटना है।

एक चुनौती के रूप में आतंकवाद अन्य गैर–पारंपरिक खतरों जैसे, मादक पदार्थ, हथियार और मानव तस्करी तथा पायरेसी से भी जुड़ा हुआ है जैसा कि अक्सर होता है इन अपराधों को करने

वाले समूह एक–दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं। मादक पदार्थों की तस्करी के परिणामस्वरूप धन–शोधन होता है, तथा इस धन का उपयोग हथियारों की तस्करी और आतंकवादी गतिविधियों का समर्थन करने के लिए किया जाता है। इसी से जुड़ी हुयी अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा चिंता मानव तस्करी तथा इसके बहुआयामी प्रभाव को लेकर है, जो आतंकवाद को बढ़ावा देने से लेकर अवैध अप्रवास तक को बढाती है, जिसके परिणामस्वरूप सामाजिक–राजनीतिक उत्पन्न होती है। समुद्री क्षेत्र में सीमा सुरक्षा एक प्रमुख मुद्दा है क्योंकि समुद्री सीमाएँ भूमि और हवाई सीमाओं की तुलना में अधिक छिद्रपूर्ण हो सकती हैं।

13.4.2 ऊर्जा सुरक्षा

किसी राज्य का आर्थिक विकास उसके व्यापार और ऊर्जा आपूर्ति से निकटता से जुड़ा हुआ है। भारत की नाजुक ऊर्जा सुरक्षा उसकी आयातित तेल पर बढ़ती निर्भरता, नियामक अनिश्चितता और अपारदर्शी प्राकृतिक गैस मूल्य निर्धारण नीतियों, कुशल जनशक्ति के सीमित समूह, अल्प–विकसित उर्ध्व–प्रवाही बुनियादी ढांचे और निकट भविष्य में ऊर्जा के प्रमुख स्रोत के रूप में जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता से गंभीर तनाव में है। कोयला, तेल और प्राकृतिक गैस भारत में प्राथमिक ऊर्जा के सबसे महत्वपूर्ण स्रोत हैं। इन हाइड्रोकार्बन की अपर्याप्त घरेलू आपूर्ति देश को अपना आयात बढ़ाने के लिए मजबूर कर रही है। सटीक शब्दों में, ऊर्जा सुरक्षा का अर्थ है कि हमें देश की गैर–नवीकरणीय पेट्रोलियम उत्पादों की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने में सक्षम होना चाहिए। 2020 तक भारत में तेल की खपत बढ़कर 24. 5 करोड़ टन सालाना होने की उम्मीद है और हमारी आयात निर्भरता बढ़कर करीब 85 फीसदी हो जाएगी। भारत का लक्ष्य 2050 तक परमाणु ऊर्जा से 25 प्रतिशत बिजली की आपूर्ति करना है। इसके लिए आयातित यूरेनियम की आवश्यकता है। इससे ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जक हाइड्रोकार्बन पर भारत की निर्भरता भी कम होगी, क्योंकि भारत का अधिकांश बिजली उत्पादन पर्यावरण की दृष्टि से अस्थायी कोयले पर निर्भर करता है। भारत में कोयला बहुतायत में हैय और भारत पर्यावरणीय आपत्तियों के बावजूद कोयला आधारित बिजली संयंत्रों से बिजली पैदा करना जारी रखेगा क्योंकि यह बिजली उत्पादन का सबसे किफायती तरीका है। वर्तमान में, भारत के ऊर्जा जरूरतों में परमाणु ऊर्जा का योगदान अभी भी बहुत कम है, जो कुल जरूरत का लगभग तीन प्रतिशत है। अतएव परमाणु ऊर्जा विकसित करना भारत की ऊर्जा जरूरतों का एक समाधान हो सकता है।

विकासशील अर्थव्यवस्था की बढ़ती ऊर्जा आवश्यकता को देखते हुए भारत में ऊर्जा सुरक्षा एक बढ़ती हुई चिंता है। चूँकि भारत सहित दक्षिण एशियाई राज्यों का तेल और प्राकृतिक गैस सहित अधिकांश व्यापार समुद्री मार्ग से होता है, इसलिए समुद्री मार्ग इन देशों की जीवन रेखा बनाती हैं। चूंकि अंतरराष्ट्रीय ऊर्जा बाजार विश्वसनीय परिवहन पर निर्भर है जो ज्यादातर समुद्र आधारित है, किसी एक अवरोध बिंदु के अस्थायी अवरोध से कुल ऊर्जा लागत में पर्याप्त वृद्धि हो सकती है।

भारत की भौगोलिक स्थिति इसे भारत–प्रशांत क्षेत्र से गुजरते हुए, अंतर्राष्ट्रीय वाणिज्य के कुछ प्रमुख व्यापारिक मार्गों के चौराहे पर रखती है। फारस की खाड़ी से निकलने वाला होर्मुज जलडमरूमध्य और हिन्द तथा प्रशांत महासागरों को जोड़ने वाला मलक्का जलडमरूमध्य दुनिया के सर्वाधिक महत्त्व के रणनीतिक अवरुद्ध बिंदु हैं। फारस की खाड़ी, अफ्रीका और यूरोप से अंतरराष्ट्रीय लंबी दूरी तय कर बड़ी मात्रा में आने वाला समुद्री माल हिंद महासागर से होकर गुजरता है। इन समुद्री मार्गों के अस्थायी रूप से भी बाधित होने से ऊर्जा लागत

में पर्याप्त वृद्धि हो सकती है। पश्चिम एशिया से दक्षिण एशिया में आने वाले आयात होर्मुज जलडमरूमध्य का उपयोग करते हैं। जलडमरूमध्य के बंद होने से समुद्री यातायात में वृद्धि के साथ–साथ विभिन्न खतरों, जिसमे समुद्री डकैती शामिल है, समुद्री आतंकवाद और अंतर–राज्यीय संघर्षों की विविधता और तीव्रता में आनुपातिक वृद्धि होने की आशंका है जो क्षेत्र में ऊर्जा सुरक्षा को चुनौती दे सकते हैं।

उच्च कीमतों और आपूर्ति की कमी की बढ़ती आशंकाओं ने वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति की उपलब्धता और उस तक पहुंच के बारे में चिंताओं ने एशिया और अन्य जगहों पर प्रमुख तेल आयात करने वाले देशों के मध्य नए तनाव पैदा कर दिए हैं। इस संदर्भ में, कुछ विश्लेषकों का सुझाव है कि बड़े पैमाने पर ऊर्जा को लेकर होने वाले संसाधन युद्ध, इक्कीसवीं सदी को परिभाषित करने वाली विशिष्टताओं में से एक होगा। आपूर्ति श्रृंखला की निरंतरता ऊर्जा सुरक्षा की कुंजी है। साथ ही संसाधनों का उचित प्रकार से उपयोग भी समय की मांग है।

सीमित संसाधन और असीमित महत्वाकांक्षाएँ समस्या का मूल कारण है। ऊर्जा की सुरक्षा के दो पहलू हैं; हमें न केवल दुनिया के विभिन्न हिस्सों में उपस्थित भविष्य के तेल संसाधनों की सुरक्षा के बारे में चिंता करनी पड़ेगी, बल्कि हमें दुनिया भर में फैली लंबी और सुरक्षा की दृष्टि से क्षीण आपूर्ति श्रृंखलाओं को किसी भी प्रकार के अवरोध से सुरक्षित रखने के लिए भी सुरक्षा प्रदान करनी पड़ेगी।

13.4.3 साइबर सुरक्षा

पिछले एक साल में भारत में सभी कार्यक्षेत्रों और सभी प्रकार की कंपनियों में डेटा उल्लंघन और साइबर हमलों की घटनाओं में तेज वृद्धि देखी गई है। साइबरस्पेस आपस मे जुड़ा हुआ अंतर्जालीय पारितंत्र है। पिछले दशक में साइबर घुसपैठ और हमलों में नाटकीय रूप से वृद्धि हुई है जिसका परिणाम व्यक्तिगत और व्यावसायिक रूप से संवेदनशील जानकारी का उजागर होना, महत्वपूर्ण कार्यों का बाधित होना और अर्थव्यवस्था पर अनावश्यक भार पड़ना है साइबर सुरक्षा हमारे साइबर स्पेस को हमले, क्षति, दुरुपयोग और आर्थिक जासूसी से बचा रही है। साइबर स्पेस में अंतर्निहित कमजोरियां हैं जिन्हें दूर नहीं किया जा सकता है। राष्ट्र, गैर–राजकीय कारक तथा व्यक्ति सभी ऐसे हमले करने में सक्षम हैं। वैश्विक समुदाय के सामने आयी यह एक नयी अंतरराष्ट्रीय चुनौती है।

दुनिया में सबसे ज्यादा अंतर्जाल उपभोक्ताओं के सन्दर्भ में भारत अमेरिका और चीन के बाद तीसरे नंबर पर है। भारत अमेरिका के साथ अवांछनीय ईमेल भेजने वाले दुनिया के शीर्ष 10 देशों में से एक है। सुरक्षा सॉफ्टवेयर फर्म सिमेंटेक के अनुसार, भारत 2018 में उन देशों की सूची में तीसरे स्थान पर था जहां साइबर खतरों की सबसे अधिक संख्या का पता चला और 2017 में लक्षित हमलों के मामले में दूसरे स्थान था। 2017 में 'वाना क्राई रैनसमवेयर ' या फेसबुक डेटा ब्रीच जैसे हालिया खतरे, जिसने कथित तौर पर लाखों भारतीय उपयोगकर्ताओं को भी प्रभावित किया, इसके कुछ उदहारण हैं। बैंकिंग प्रणाली, निगरानी प्रणाली, औद्योगिक नियंत्रण प्रणाली और चिकित्सा उद्योग सबसे अधिक संभावित प्रभावित क्षेत्र हैं। जैसे–जैसे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) और मशीन लर्निंग गति पकड़ती है, और अधिक से अधिक उद्योगों को प्रभावित करना शुरू करती है, साइबर सुरक्षा में इसके द्वारा एक बड़ी भूमिका निभाया जाना निश्चित है। वर्तमान में, सूचना अधिनियम–2000 देश में साइबर अपराध और डिजिटल वाणिज्य से निपटने के लिए प्राथमिक कानून है साथ ही भारत संयुक्त राष्ट्र वैश्विक साइबर सुरक्षा सूचकांक (जीसीआई) 2017 में 23वें स्थान पर है। साइबर सुरक्षा

वर्तमान युग की नवीनतम सुरक्षा चिंताओं में से एक है। वर्तमान डिजिटल युग में, भारत सरकार साइबर अपराधों को रोकने और देश में एक सुरक्षित और भयमुक्त साइबर नेटवर्क बनाने के लिए गंभीर कदम उठा रही है।

बोध प्रश्न 3

नोटः i) अपने उत्तर के लिए नीचे दिए गए स्थान का प्रयोग करें।

ii) अपने उत्तर की युक्तियों के लिए इकाई का अंत देखें।

1) 21वीं सदी में भारत के समक्ष उपस्थित प्रमुख गैर–पारंपरिक सुरक्षा चुनौतियों का मूल्यांकन करें।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

13.5 सारांश

अतएव, 21वीं सदी के वैश्वीकृत विश्व में भारत के सामने कुछ प्रमुख चुनौतियाँ ऊपर बताई गई हैं। भारत के आसपास का क्षेत्र, क्षेत्रीय तथा क्षेत्र से बाहर के देशों के यहाँ बढ़ते हितों के साथ तेजी से रणनीतिक प्रतिस्पर्धा का स्थान बनता जा रहा है। साथ ही गैर–सैन्य स्रोतों और गैर–राजकीय कारकों से उत्पन्न खतरे हाल के दिनों में भयावह होते जा रहे हैं।

तेजी से बदलता क्षेत्रीय शक्ति–संतुलन एक मुश्किल भू–राजनीतिक वातावरण तैयार कर रहा है, जिसके परिणामस्वरूप इस क्षेत्र में प्रतिस्पर्धा और विवाद की नयी चुनौतियाँ खड़ी हो गयी हैं। भारत विश्वास निर्माण उपायों, संवाद, द्विपक्षीय तथा बहुपक्षीय संबंधों और विश्वसनीय सैन्य प्रतिरोध सहित प्रभावी कूटनीति के माध्यम से क्षेत्र और वैश्विक संदर्भ में शांति और स्थिरता बनाए रखने के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध है। भारत को परिवर्तनशील वैश्विक सुरक्षा वातावरण में सुरक्षा चिंताओं से निपटने के लिए दीर्घकालिक रणनीति पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है। राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और वैश्विक स्तर पर आने वाली सुरक्षा चुनौतियों को पहचानने और उनसे निपटने के लिए एक बहु–आयामी रणनीति अपनाने की आवश्यकता है।

13.6 कुछ उपयोगी सन्दर्भ

Williams, Paul D. (ed.), *Security Studies: An Introduction,* 2nd Edition, Routeldge, London and New York.

Kaplan, Robert D. (2009), "Centre Stage for the 21st Century: Power Plays in the Indian Ocean", *Foreign Affairs*, pp.1-20, vol. 88, no. 2.p.32.

Rohan Mukherjee and David M. Malone, Indian foreign policy and contemporary security challenges, International Affairs (Royal Institute of International Affairs 1944-), Vol. 87, No. 1, January 2011), pp. 87-104.

Mohanan B. Pillai (2013), India's National Security: Concerns and Strategies, New Century Publications.

Singh, Baljeet (2004), *India's Security Concerns : National, Regional and Global*, The Indian Journal of Political Science, Vol. 65, No. 3 (July-Sept., 2004), pp. 345-364.

David M. Malone, C. Raja Mohan, Srinath Raghavan (2015), The Oxford Handbook of Indian Foreign Policy, Oxford University Press.

United Nations, Department of Disarmament Affairs (1986), *Concept of security,* Report of Security General, A/40/553, New York, p.24, http://www.un.org/disarmament/HomePage/ODAPublications/DisarmamentStudySeries/PDF/SS-14.pdf

United Nations General Assembly (2004), *A More Secure World: Our Shared Responsibility,* Secretary-General's High-Level Panel on Threats, Challenges and Change, Fifty-ninth session, Agenda item 55 Follow-up to the outcome of the Millennium Summit 2, UN Doc A/59/565, December 2004, p. 1, https://www1.umn.edu/humanrts/instree/report.pdf

13.7 उत्तरमाला

बोध प्रश्न 1

1) आपका उत्तर अनुभाग 13.2 पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 2

1) आपका उत्तर अनुभाग 13.3 पर आधारित होना चाहिए।

बोध प्रश्न 3

1) आपका उत्तर अनुभाग 13.4 पर आधारित होना चाहिए।